International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 12-06-2026, Accepted: 12-07-2026, Published: 27-07-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 149-152

भारतीय दलीय व्यवस्था की विशेषताएँ: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सतीश कुमार पाठक[1], डॉ. मनोज कुमार चौरसिया[2]
[1] सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय छत्रसाल महाराजा महाविद्यालय महाराजपुर जिला छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय महाविद्यालय बकस्वाहा जिला छतरपुर, मध्य प्रदेश, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.3.12263

सारांश
भारतीय दलीय व्यवस्था भारतीय लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का एक प्रमुख आधार है। प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय दलीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत में बहुदलीय व्यवस्था के कारण विभिन्न सामाजिक, क्षेत्रीय तथा राजनीतिक समूहों को प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ है, किंतु इसके साथ राजनीतिक दलों में विभाजन, आंतरिक लोकतंत्र का अभाव, वैचारिक अस्पष्टता, व्यक्तित्व–आधारित राजनीति, क्षेत्रीय दलों का बढ़ता प्रभाव, गुटबंदी, दल–बदल, वंशानुगत नेतृत्व तथा राजनीति के अपराधीकरण जैसी प्रवृत्तियाँ भी विकसित हुई हैं। इन प्रवृत्तियों ने लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व को व्यापक बनाया है, परंतु राजनीतिक स्थिरता, सुशासन, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। अध्ययन का निष्कर्ष है कि भारतीय लोकतंत्र को अधिक सुदृढ़ एवं उत्तरदायी बनाने के लिए राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र, वैचारिक स्पष्टता, संगठनात्मक पारदर्शिता तथा नैतिक राजनीतिक संस्कृति को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

मूल शब्द: भारतीय दलीय व्यवस्था, बहुदलीय प्रणाली, राजनीतिक दल, लोकतंत्र, क्षेत्रीय दल, दल–बदल, आंतरिक लोकतंत्र. संगठन

वर्तमान युग में लोकतंत्र को शासन की लोकप्रिय और प्रभाव शाली व्यवस्था माना जाता है। लोकतांत्रिक शासन का मूल आधार जनता की सहभागिता है। लोकतंत्र सामान्यतः दो रूपों में पाया जाता है— प्रत्यक्ष लोकतंत्र तथा प्रतिनिधिक (अप्रत्यक्ष) लोकतंत्र। आधुनिक विशाल राज्यों में जनसंख्या, क्षेत्रफल तथा प्रशासनिक जटिलताओं के कारण प्रत्यक्ष लोकतंत्र व्यावहारिक नहीं है। इसलिए अधिकांश देशों की तरह भारत ने भी प्रतिनिधिक लोकतंत्र को अपनाया है। प्रतिनिधिक लोकतंत्र में नागरिक अपने मताधिकार का प्रयोग करके जनप्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। निर्वाचित प्रतिनिधि संविधान के अनुरूप शासन का संचालन करते हैं तथा जनता के प्रति उत्तरदायी रहते हैं। इस पूरी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को सफल बनाने में राजनीतिक दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। राजनीतिक दल जनता और सरकार के बीच सेतु का कार्य करते हैं। वे जनमत का निर्माण करते हैं, राजनीतिक नेतृत्व तैयार करते हैं, चुनावों में भाग लेते हैं तथा शासन को उत्तरदायी और लोकतांत्रिक बनाए रखने में योगदान देते हैं। इसलिए लोकतांत्रिक शासन की सफलता राजनीतिक दलों की सुदृढ़ता, उत्तरदायित्व और संगठनात्मक क्षमता पर निर्भर करती है।

भारतीय लोकतंत्र में स्वतंत्रता के पश्चात बहुदलीय व्यवस्था का विकास हुआ। समय के साथ अनेक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल अस्तित्व में आए। इस व्यवस्था ने लोकतंत्र को व्यापक प्रतिनिधित्व प्रदान किया, किंतु इसके साथ अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ भी सामने आईं। दलों का विभाजन, अवसरवादी राजनीति, गठबंधन सरकारों की बढ़ती प्रवृत्ति, आंतरिक लोकतंत्र का अभाव तथा क्षेत्रीय दलों का प्रभाव भारतीय दलीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ बन गई हैं।

शोध कार्य के उद्देश्य

- भारतीय दलीय व्यवस्था की अवधारणा एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
- भारतीय दलीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण करना।
- भारतीय दलीय व्यवस्था के विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का अध्ययन करना।
- भारतीय दलीय व्यवस्था में बहुदलीय प्रणाली, क्षेत्रीय दलों, गुटबंदी तथा दल–बदल जैसी प्रवृत्तियों का मूल्यांकन करना।
- राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र, वैचारिक प्रतिबद्धता, नेतृत्व संरचना तथा संगठनात्मक चुनौतियों का विश्लेषण करना।
- भारतीय दलीय व्यवस्था की प्रमुख समस्याओं तथा लोकतांत्रिक शासन पर उनके प्रभाव का अध्ययन करना।
- भारतीय लोकतंत्र को अधिक उत्तरदायी एवं सुदृढ़ बनाने के लिए दलीय व्यवस्था में अपेक्षित सुधारों का परीक्षण करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक–विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। इसके अंतर्गत राजनीति विज्ञान से संबंधित मानक पुस्तकों, शोध–पत्रों, संदर्भ ग्रंथों, सरकारी प्रकाशनों, निर्वाचन आयोग की रिपोर्टों, संवैधानिक प्रावधानों तथा अन्य प्रामाणिक स्रोतों का अध्ययन किया गया है। संकलित तथ्यों का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए भारतीय दलीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं, प्रवृत्तियों तथा चुनौतियों का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण प्रस्तुत किया गया

भारतीय दलीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ

भारतीय दलीय व्यवस्था का स्वरूप देश के लोकतंत्र, संघीय व्यवस्था तथा बहुलतावादी सामाजिक संरचना के अनुरूप विकसित हुआ है। इसकी विशेषताएं समय, राजनीतिक परिस्थितियों तथा सामाजिक परिवर्तनों के साथ निरंतर परिवर्तित होती रही हैं। भारतीय दलीय व्यवस्था में जहाँ बहुदलीय प्रतिस्पर्धा, व्यापक जनप्रतिनिधित्व तथा क्षेत्रीय दलों की सक्रिय भूमिका जैसी सकारात्मक प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं, वहीं दल–बदल, गुटबंदी, आंतरिक लोकतंत्र का अभाव, वंशवाद तथा वैचारिक अस्पष्टता जैसी चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। इन सभी

विशेषताओं का क्रमबद्ध विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. भारतीय दलीय व्यवस्था का बहुदलीय स्वरूप

भारत की दलीय व्यवस्था ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी द्विदलीय प्रणाली पर आधारित न होकर बहुदलीय स्वरूप की है। भारतीय लोकतंत्र में राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दोनों प्रकार के राजनीतिक दल सक्रिय रूप से कार्य रत हैं। देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई तथा क्षेत्रीय विविधता ने विभिन्न विचारधाराओं, वर्गों और हित समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले अनेक राजनीतिक दलों के विकास को प्रोत्साहित किया है। परिणामस्वरूप भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में बहुदलीय प्रणाली का सुदृढ़ विकास हुआ है। बहुदलीय व्यवस्था के कारण अनेक चुनावों में किसी एक राजनीतिक दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हो सका। ऐसी परिस्थितियों में विभिन्न दलों के सहयोग से गठबंधन सरकारों का गठन हुआ, जिससे भारतीय राजनीति में गठबंधन युग का उदय हुआ। इस व्यवस्था ने शासन में विभिन्न सामाजिक एवं क्षेत्रीय समूहों की भागीदारी और प्रतिनिधित्व को बढ़ावा दिया, किंतु कई अवसरों पर राजनीतिक अस्थिरता, सरकारों के अल्पकालिक स्वरूप, दल–बदल तथा राजनीतिक सौदेबाजी जैसी प्रवृत्तियाँ भी देखने को मिलीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात लगभग तीन दशकों तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का केंद्र तथा अधिकांश राज्यों में प्रभावी प्रभुत्व बना रहा। किंतु 1967 के विधानसभा चुनावों में अनेक राज्यों में कांग्रेस की राजनीतिक स्थिति कमजोर हुई और गैर–कांग्रेसी सरकारों का गठन प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात 1977 के आम चुनावों में आपातकाल की पृष्ठभूमि में विभिन्न विपक्षी दलों ने एकजुट होकर जनता पार्टी का गठन किया, जिसने केंद्र में कांग्रेस के दीर्घकालीन प्रभुत्व को समाप्त किया। यद्यपि जनता पार्टी सरकार अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सकी और आंतरिक मतभेदों के कारण विघटित हो गई, तथापि इस घटना ने भारतीय राजनीति में बहुदलीय प्रतिस्पर्धा तथा गठबंधन राजनीति के विस्तार को नई दिशा प्रदान की। यद्यपि संसदीय लोकतंत्र की दृष्टि से द्विदलीय व्यवस्था को अपेक्षाकृत अधिक स्थिर और प्रभावी माना जाता है, फिर भी भारत जैसे बहुलतावादी समाज में बहुदलीय व्यवस्था विभिन्न सामाजिक, क्षेत्रीय और वैचारिक हितों को प्रतिनिधित्व प्रदान करने का महत्वपूर्ण माध्यम सिद्ध हुई ळें

2. राजनीतिक दलों में विभाजन एवं अस्थिरता की प्रवृत्ति

भारत में विभिन्न राजनीतिक दलों का निरंतर विभाजन, पुनर्गठन तथा नए दलों का गठन की प्रक्रिया चलती ही रहती है। भारत की आजादी के बाद अनेक प्रमुख दल समय–समय पर आंतरिक मतभेदों के कारण विभाजित हुए। जिससे नए राजनीतिक दल अस्तित्व में आए तथा राजनीतिक समीकरण भी लगातार परिवर्तित होते रहे। विशेष रूप से 1990 के दशक के बाद क्षेत्रीय दलों के उदय ने इस प्रवृत्ति को सक्रिय गति प्रदान की। महाराष्ट्र में 2022 में शिवसेना और 2023 में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का विभाजन हुआ। जून 2026 में पश्चिम बंगाल में अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस का विभाजन हो गया। परिणामस्वरूप भारतीय राजनीति में दलों का पुनर्गठन, विलय तथा गठबंधन एक सामान्य प्रक्रिया बन गई। इससे लोकतंत्र प्रतिस्पर्धा तो हुआ लेकिन राजनीतिक स्थायित्व तथा नीति–निर्माण की निरंतरता पर भी दूरगामी प्रभाव पड़ा। राजनीतिक दल ना तो स्वस्थ राजनीतिक चेतना ही उत्पन्न कर सके और ना ही मूल्य । सत्ता की अंधी दौड़ में वे स्वयं टूटे बिखरे और विभाजित हुए । केवल कुर्सी के लिए पार्टी निर्माण एवं विघटन के कारण लॉर्ड ब्राइस ने इसे संगठित पाखंड कहा है।

3. राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र का अभाव

भारतीय राजनीतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र की कमी है। अनेक प्रमुख राष्ट्रीय दलों में भी संगठनात्मक चुनाव नियमित रूप से नहीं कराए जाते तथा नेतृत्व का चयन सीमित व्यक्तियों के निर्णय पर आधारित होता है। कई राजनीतिक दलों में निर्णय लेने की प्रक्रिया कुछ व्यक्तियों अथवा परिवारों तक सीमित है। इसके अतिरिक्त वित्तीय पारदर्शिता, संगठनात्मक उत्तरदायित्व तथा सदस्य सहभागिता भी अपेक्षित स्तर पर दिखाई नहीं देती जो कि स्वस्थ लोकतंत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। निर्वाचन आयोग द्वारा समय–समय पर संगठनात्मक चुनावों एवं पारदर्शिता के संबंध में दिशा निर्देश जारी किए गए हैं, फिर भी अधिकांश दलों में लोकतांत्रिक कार्यप्रणाली की संस्कृति पूरी तरह विकसित नहीं हो सकी है। जिससे राजनीतिक दलों की संस्थागत मजबूती तथा लोकतांत्रिक संस्कृति प्रभावित हुई।

4. स्पष्ट विचारधारा का अभाव

अनेक राजनीतिक दलों की वैचारिक पहचान स्पष्ट एवं सुसंगत नहीं दिखाई देती। कुछ दलों को छोड़कर अधिकांश राजनीतिक दलों की नीतियों, कार्यक्रमों तथा चुनावी घोषणापत्रों में पर्याप्त समानता देखने को मिलती है। लोकतंत्र, समाजवाद, उदारवाद धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय, कल्याणकारी राज्य तथा समावेशी विकास जैसे सिद्धांत लगभग सभी राजनीतिक दलों द्वारा स्वीकार किए जाते हैं, किंतु व्यवहार में दलों की प्राथमिकताएँ अक्सर परिस्थितियों और राजनीतिक स्वार्थ के अनुसार परिवर्तित होती रहती हैं। परिणामस्वरूप वैचारिक प्रतिबद्धता की अपेक्षा व्यावहारिक राजनीति और सत्ता प्राप्ति की लोलुपता अधिक प्रभावी है। इससे मतदाताओं के लिए विभिन्न दलों के बीच स्पष्ट वैचारिक अंतर स्पष्ट रूप से समझना दुष्कर हो गया है। कई बार ऐसे दल भी साथ आकर गठबंधन बना लेते हैं जिनकी विचारधारा, नीतियां और राजनीतिक इतिहास एक दूसरे से मेल नहीं खाते और ना ही सांझा कार्यक्रम बन पाता है ये अस्वाभाविक और बेमेल गठबंधन होते हैं। जैसे महाराष्ट्र में कांग्रेस और शिवसेना गठबंधन जम्मू कश्मीर में बीजेपी और पीडीपी

5. व्यक्तित्व–आधारित राजनीति की प्रवृत्ति

भारत में राजनीतिक दल प्रभावशाली नेतृत्व के इर्द–गिर्द ज्यादा विकसित होते हैं जबकि विचार धारा और संगठन की परंपरा ही राजनीतिक दलों को जीवंत रखती है। अनेक राजनीतिक दलो की पहचान उसके सिद्धांतों या कार्यक्रमों से अधिक उसके प्रमुख नेता के व्यक्तित्व से है। चुनावी प्रचार, जनसमर्थन तथा संगठनात्मक गतिविधियों में भी शीर्ष नेतृत्व की व्यक्तिगत छवि को विशेष महत्व दिया जाता है। परिणामस्वरूप दल का अस्तित्व और लोकप्रियता उसके शीर्ष नेता पर अत्यधिक निर्भर हो जाती है। ऐतिहासिक रूप से अनेक राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दलों की पहचान उनके प्रमुख नेताओं के कारण स्थापित हुई है दक्षिण भारत में यह परंपरा ज्यादा देखी गई है। कई राजनीतिक दलों के नाम भी उनके संस्थापक अथवा प्रभावशाली नेताओं से जुड़े रहे हैं। इस प्रवृत्ति के कारण संगठनात्मक लोकतंत्र और सामूहिक नेतृत्व अपेक्षाकृत कमजोर पड़ जाता है तथा व्यक्तिकेंद्रित राजनीति को बढ़ावा मिलता है। इसके परिणाम स्वरूप भारतीय राजनीति में राजनीतिक दलों की अपेक्षा राजनीतिक व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली दिखाई देते हैं।

6. पहचान–आधारित राजनीतिक दलों का उदय

भारत में अनेक राजनीतिक दलों का गठन वैचारिक या नीतिगत आधार की अपेक्षा धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति, क्षेत्र तथा सामाजिक पहचान जैसे पारंपरिक कारकों के आधार पर हुआ है। जबकि पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों में राजनीतिक दल प्रायः सामाजिक–आर्थिक नीतियों, राजनीतिक सिद्धांतों अंतरराष्ट्रीय नीतियों और वैचारिक प्रतिबद्धताओं को आधार बनाकर संगठित और सक्रिय होते हैं, भारत में अनेक दल विशिष्ट समुदायों अथवा क्षेत्रीय समूहों के संकीर्ण हितों का न केवल वरीयता देते बल्कि

उनका तुष्टीकरण भी करते है। ऐसे राजनीतिक दल अपने समर्थक वर्ग की आकांक्षाओं और हितों को प्रधानता देते हैं, जि राष्ट्रीय हितों की अपेक्षा क्षेत्रीय मुद्दे अधिक महत्वपूर्ण स्तिथि प्राप्त कर लेते हैं। परिणामस्वरूप भारतीय राजनीति में पहचान–आधारित राजनीति को बढ़ावा मिलता है तथा व्यापक जनहित और राष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रभावित होता है।। यद्यपि इस प्रकार के दल लोकतांत्रिक व्यवस्था में विविध सामाजिक समूहों को प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं, फिर भी संतुलित राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है कि वे संकीर्ण हितों से ऊपर उठकर समावेशी एवं व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाएँ।

7. सशक्त विपक्ष के अभाव की समस्या

संसदीय शासन व्यवस्था में विपक्ष सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने के साथ सरकार की नीतियों की समीक्षा भी करता है। जनता के समक्ष वैकल्पिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता है। भारतीय राजनीति में कई अवसरों पर विपक्ष अपनी भूमिका प्रभावी शाली ढंग से निभाई है, लेकिन दीर्घ काल तक उसका स्वरूप विखंडित और कमजोर बना रहा। विपक्षी दलों के बीच वैचारिक मतभेद, नेतृत्व संबंधी विवाद , राज्य की राजनीति तथा राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण वे अनेक बार एकजुट होकर सरकार का प्रभावी विकल्प प्रस्तुत नहीं कर सके। गठबंधन राजनीति के दौर में विपक्ष की स्थिति में थोड़ा सुधार अवश्य हुआ, फिर भी एक सशक्त एवं संगठित विपक्ष की आवश्यकता आज भी अनुभव की जाती है। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए सरकार और विपक्ष दोनों का समान रूप से सक्रिय एवं उत्तरदायी होना आवश्यक है।

8. क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का बढ़ता प्रभाव

भारतीय संघीय शासन व्यवस्था तथा देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषाई और क्षेत्रीय विविधताओं ने क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान की हैं। प्रारंभिक दौर में इन दलों का प्रभाव मुख्यतः अपने–अपने राज्यों तक सीमित था, किंतु 1990 के दशक के पश्चात राष्ट्रीय राजनीति में इनकी भूमिका निरंतर सशक्त होती गई। विशेष रूप से गठबंधन राजनीति के उदय के साथ क्षेत्रीय दल केंद्र सरकारों के गठन, स्थायित्व तथा नीतिगत निर्णयों में महत्वपूर्ण और कई बार निर्णायक भूमिका निभाने लगे। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों ने अपने–अपने राज्यों की समस्याओं, क्षेत्रीय आकांक्षाओं, भाषाई एवं सांस्कृतिक अस्मिता तथा स्थानीय विकास से जुड़े मुद्दों को राष्ट्रीय राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाया। परिणामस्वरूप भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय हितों को अधिक प्रभावी प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ तथा संघीय व्यवस्था को भी व्यावहारिक रूप से सुदृढ़ता मिली। भारत के विभिन्न राज्यों में अनेक प्रभावशाली क्षेत्रीय राजनीतिक दल सक्रिय रहे हैं। इनमें तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) तथा अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (एआईएडीएमके), पंजाब में शिरोमणि अकाली दल, जम्मू–कश्मीर में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) तथा नेशनल कॉन्फ्रेंस, आंध्र प्रदेश में तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) तथा बिहार में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और जनता दल (यूनाइटेड) [जद(यू)] प्रमुख क्षेत्रीय दलों के रूप में उल्लेखनीय हैं। इन दलों ने समय–समय पर राष्ट्रीय राजनीति और गठबंधन सरकारों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

9. राजनीतिक दलों में गुटबंदी की प्रवृत्ति

भारत में लगभग सभी राजनीतिक दलों में गुटबंदी विद्यमान है। विभिन्न नेताओं एवं उनके समर्थकों के अलग–अलग समूह सक्रिय रहते हैं, जो संगठनात्मक पदों, चुनावी टिकटों तथा नेतृत्व की भूमिका प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। कभी कभी यह समूह वंशानुगत आधार पर संचालित होते देखे गए है यह आंतरिक प्रतिस्पर्धा संगठनात्मक विकास के स्थान पर व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं का रूप ले लेती है। जिससे दलों में संगठन और आंतरिक अनुशासन कमजोर होता है, निर्णय प्रक्रिया प्रभावित होती है। लगातार बढ़ती गुटबंदी राजनीतिक दलों की कार्यक्षमता तथा राजनीतिक संस्कृति दोनों को प्रभावित करती है।

10. नीतिगत एवं वैचारिक प्रतिबद्धता का अभाव

किसी भी राजनीतिक दल की पहचान उसकी विचारधारा, नीतियों तथा कार्यक्रमों से होती है। भारतीय राजनीति में अनेक दल ऐसे हैं जिनकी नीतियों और कार्यक्रमों में पर्याप्त स्पष्टता नहीं दिखाई देती। बदलती राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार कई दल अपने रुख में बार–बार परिवर्तन करते हैं, जिससे मतदाताओं के सामने स्पष्ट वैचारिक विकल्प उपलब्ध नहीं हो पाता।जब राजनीतिक दल सिद्धांतों और विचारधारा की अपेक्षा चुनावी लाभ और सत्ता प्राप्ति को अधिक महत्व देने लगते हैं, तब न केवल अवसरवादी राजनीति को बढ़ावा मिलता है बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, नीति–आधारित प्रतिस्पर्धा तथा जनविश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए आवश्यक है कि राजनीतिक दल स्पष्ट विचारधारा, दीर्घकालिक कार्यक्रम तथा सार्वजनिक उत्तरदायित्व के आधार पर कार्य करें।

11. दल–बदल की प्रवृत्ति एवं उसके प्रभाव

भारतीय राजनीति में दल–बदल की गंभीर समस्या रही है। कई जनप्रतिनिधि व्यक्तिगत हित, राजनीतिक लाभ, भ्रष्टाचार व जांच एजेंसियों के डर अथवा सत्ता में भागीदारी प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने मूल राजनीतिक दल को छोड़कर दूसरे दल मे सम्मिलित हो जाते हैं। राजनीतिक दल बदल से अनेक बार सरकारों की स्थिरता प्रभावित हुई तथा लोकतांत्रिक मूल्य बुरी तरह प्रभावित हुए दल बदल पर नियंत्रण के लिए संविधान के 52वें संशोधन (1985) के माध्यम से दल–बदल विरोधी कानून लागू किया गया तथा बाद में 91वें संविधान संशोधन (2003) द्वारा इसके प्रावधानों को और अधिक प्रभावी बनाया गया। इसके बाद भी वर्तमान समय में दल–बदल की घटनाएँ बढ़ी ही हैं, जिससे राजनीतिक नैतिकता और जनविश्वास दोनों प्रभावित होते हैं।

12. राजनीतिक दलों की कथनी एवं व्यवहार में विरोधाभास

राजनीतिक दल चुनाव के समय जनता से बड़े–बड़े वादे करते हैं, किंतु सत्ता प्राप्त करने के पश्चात वादों का पूर्णतः पालन नहीं कर पाते। घोषणापत्रों में किए गए अनेक आश्वासन व्यवहार में राजनीतिक दलों ने अपेक्षित रूप से लागू नही किए है, जिससे मतदाताओं का विश्वास कम होता है। भारत में शिक्षित तबका भी घोषणा पत्र पर भरोसा नहीं करता। लोकतंत्र की सफलता केवल चुनाव जीतने में नहीं, बल्कि जनता के प्रति उत्तरदायित्व निभाने और विश्वास बनाए रखने में निहित है। यदि राजनीतिक दल अपने घोषित कार्यक्रमों, नीतियों और वचनों के अनुरूप कार्य करें, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था अधिक सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बन सकती है।

13. वंशानुगत नेतृत्व की प्रवृत्ति

भारतीय राजनीति में अनेक दलों के भीतर नेतृत्व का उत्तराधिकार एक ही परिवार तक सीमित है। कई राजनीतिक दलों में संगठन का सर्वोच्च नेतृत्व पीढ़ी–दर–पीढ़ी एक ही परिवार के सदस्यों के हाथों में स्थानांतरित होता रहा है। इस व्यवस्था के कारण योग्य एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं के लिए शीर्ष नेतृत्व तक पहुँचने के अवसर नगण्य हो जाते हैं। साथ ही, आंतरिक लोकतंत्र और नेतृत्व चयन की निष्पक्ष प्रक्रिया भी प्रभावित होती है। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है कि नेतृत्व का चयन योग्यता,

अनुभव, संगठनात्मक योगदान तथा लोकतांत्रिक प्रक्रिया के आधार पर किया जाए, न कि केवल पारिवारिक परंपरा के आधार पर।

14. राजनीति में भ्रष्टाचार एवं अपराधीकरण

भारतीय लोकतंत्र के समक्ष सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक राजनीति में भ्रष्टाचार तथा अपराधीकरण का बढ़ता प्रभाव है। चुनावी प्रक्रिया में धनबल और बाहुबल का उपयोग, आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों की राजनीतिक भागीदारी तथा चुनावी व्यय में निरंतर वृद्धि लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए चिंता का विषय है। राजनीतिक दल केवल इस पैमाने पर टिकट आवंटन करने लगे है कि जीतने की प्रायिकता क्या है भले वह कदाचरण में पूर्ण लिप्त हो। अब राजनीतिक प्रतिस्पर्धा नैतिक मूल्यों के स्थान पर आर्थिक एवं बाहुबल आधारित साधनों पर निर्भर हो रही है। इसके परिणाम स्वरूप शासन की पारदर्शिता तथा जनता का विश्वास प्रभावित होता है। इसलिए आवश्यक है कि चुनाव प्रक्रिया अधिक पारदर्शी हो, राजनीतिक दलों की वित्तीय जवाबदेही सुनिश्चित की जाए तथा स्वच्छ छवि वाले उम्मीदवारों को राजनीति में प्रोत्साहित किया जाए।

15. निर्दलीय प्रत्याशियों की भूमिका एवं प्रभाव

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों के अतिरिक्त निर्दलीय उम्मीदवार भी चुनावों में भाग लेते रहे हैं। यद्यपि इनकी संख्या समय के साथ घटती गई है, फिर भी अनेक अवसरों पर इन्होंने संसद तथा राज्य विधानमंडलों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। निर्दलीय सदस्य किसी संगठित राजनीतिक दल से संबद्ध नहीं होते, इसलिए उनकी राजनीतिक प्रतिबद्धता और नीतिगत दृष्टिकोण अपेक्षाकृत व्यक्तिगत होते हैं। निर्दलीय सदस्यों की भूमिका स्थानीय जनहित के मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाने में महत्वपूर्ण हो सकती है, किंतु संगठित राजनीतिक आधार के अभाव में उनकी प्रभावशीलता सीमित रह जाती है। कई बार चुनाव के उपरांत वे किसी राजनीतिक दल या गठबंधन का समर्थन कर लेते हैं, जिससे उनकी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान प्रभावित होती है। वर्तमान समय में भारतीय राजनीति में राजनीतिक दलों की बढ़ती सुदृढ़ता और चुनावी प्रतिस्पर्धा के कारण निर्दलीय उम्मीदवारों की सफलता की संभावना पहले की अपेक्षा कम हुई है।

16. दलीय राजनीति का आर्थिक हितों पर आधारित न होना

भारत में राजनीतिक दलों का विकास मुख्यतः सामाजिक एवं आर्थिक वर्गों के हितों के आधार पर नहीं, बल्कि ऐतिहासिक, राजनीतिक तथा संगठनात्मक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हुआ है। अनेक राजनीतिक दलों का उदय वैचारिक वर्ग–संघर्ष के बजाय राजनीतिक मतभेदों, दलों के विभाजन, नेतृत्व संबंधी असहमति तथा सत्ता–संघर्ष के कारण हुआ। इसी कारण भारतीय दलीय व्यवस्था में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा प्रायः वर्गीय हितों की अपेक्षा नेतृत्व, संगठन और राजनीतिक रणनीतियों से अधिक प्रभावित दिखाई देती है।

उपसंहार

भारतीय दलीय व्यवस्था ने देश में लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने, जनप्रतिनिधित्व का विस्तार करने तथा विविध सामाजिक समूहों को राजनीतिक मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। साथ ही, इसमें बहुदलीय प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय दलों का उदय, गठबंधन राजनीति, दल–बदल, गुटबंदी, वंशवाद, भ्रष्टाचार तथा आंतरिक लोकतंत्र के अभाव जैसी अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि राजनीतिक दल केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम न बनें, बल्कि जनहित, संवैधानिक मूल्यों, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा लोकतांत्रिक आदर्शों को अपने कार्यों का आधार बनाएँ। जब राजनीतिक दल वैचारिक प्रतिबद्धता, संगठनात्मक लोकतंत्र और जनकल्याण की भावना के साथ कार्य करेंगे, तभी भारतीय लोकतंत्र अधिक सुदृढ़, उत्तरदायी और प्रभावशाली बन सकेगा।

संदर्भ

1. जैन,पी.(2009).राजनीति विज्ञान.साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा.पृष्ठ 66–69
2. लक्ष्मीकांत, एम. (2015). भारत की राजव्यवस्था (चतुर्थ संस्करण). मैकग्रा हिल एजुकेशन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली. पृष्ठ 64.4.
3. वर्णवाल, महेश. (2017). भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था (प्रथम संस्करण). कॉसमॉस पब्लिकेशन, दिल्ली. पृष्ठ 261.
4. Chakravarty, Praveen. (2023, 18 July). How India Can Prevent Unnatural Political Alliances. The Indian Express.
5. Bryce, Lord. (1921). Modern Democracies (Part I). Macmillan, New York.
6. लाडला, मंजू. (2018). भारत के राजनीतिक दल रू दशा एवं दिशा. Innovation: The Research Concept, खंड (टवस.) 3, अंक (Issue) 4, अप्रैल 2018. ISSN: 2456–5474.
7. नागपाल, ओम. (2001–02). राजनीति विज्ञान के मूल तत्व रू भारत का राष्ट्रीय आंदोलन, शासन और राजनीति (नवां संस्करण). कमल प्रकाशन, इंदौर. पृष्ठ 156–157.
8. फड़िया, बी. एल. (2000). राजनीति विज्ञान (राजनीति विज्ञान के आधार तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन). कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल. पृष्ठ 183–184.
9. जैन, पुखराज. (2013). भारतीय शासन एवं राजनीति. साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा.
10. श्याम सुंदरम, जे. एवं शर्मा, सी. पी. राजनीति विज्ञान. राम प्रसाद एंड संस, भोपाल.
11. कविता, सुमन. (2013). भारतीय राजनीति व्यवस्था में दल–बदल का विकास. प्हदपजमक डपदके श्रवनतदंस, खंड 6, अंक 11, जुलाई 2013.
12. स्वामी, के. वी. (2020). Effect of Anti-Defection Law on Democracy. Editorial Board, खंड 9, अंक 4, पृष्ठ 192.
13. नारायण, एल. (2018). भारतीय लोकतंत्र में दलीय प्रणाली के विविध स्वरूप रू 1952 से 2014 तक का राजनीतिक परिदृश्य. International Journal of Research, खंड 5, अंक 2, जनवरी 2018.
14. दैनिक भास्कर. (23 जून, 2022). महाराष्ट्र में शिवसेना में बगावत: एकनाथ शिंदे के साथ अधिकांश विधायक, उद्धव सरकार पर संकट. दैनिक भास्कर, भोपाल.
15. दैनिक भास्कर. (2 जुलाई, 2023). महाराष्ट्र में एनसीपी में बड़ी टूट: अजित पवार समर्थक विधायकों के साथ सरकार में शामिल. दैनिक भास्कर, भोपाल.
16. The Indian Express. (8 जून, 2026). After Assembly Revolt, TMC Split Reaches Lok Sabha as 20 MPs Form Separate Bloc, Back NDA. द इंडियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली